संयुक्तांक मई 2026 • मूल्य : 100 रुपए

वर्ष 18

ISSN 2347-6613

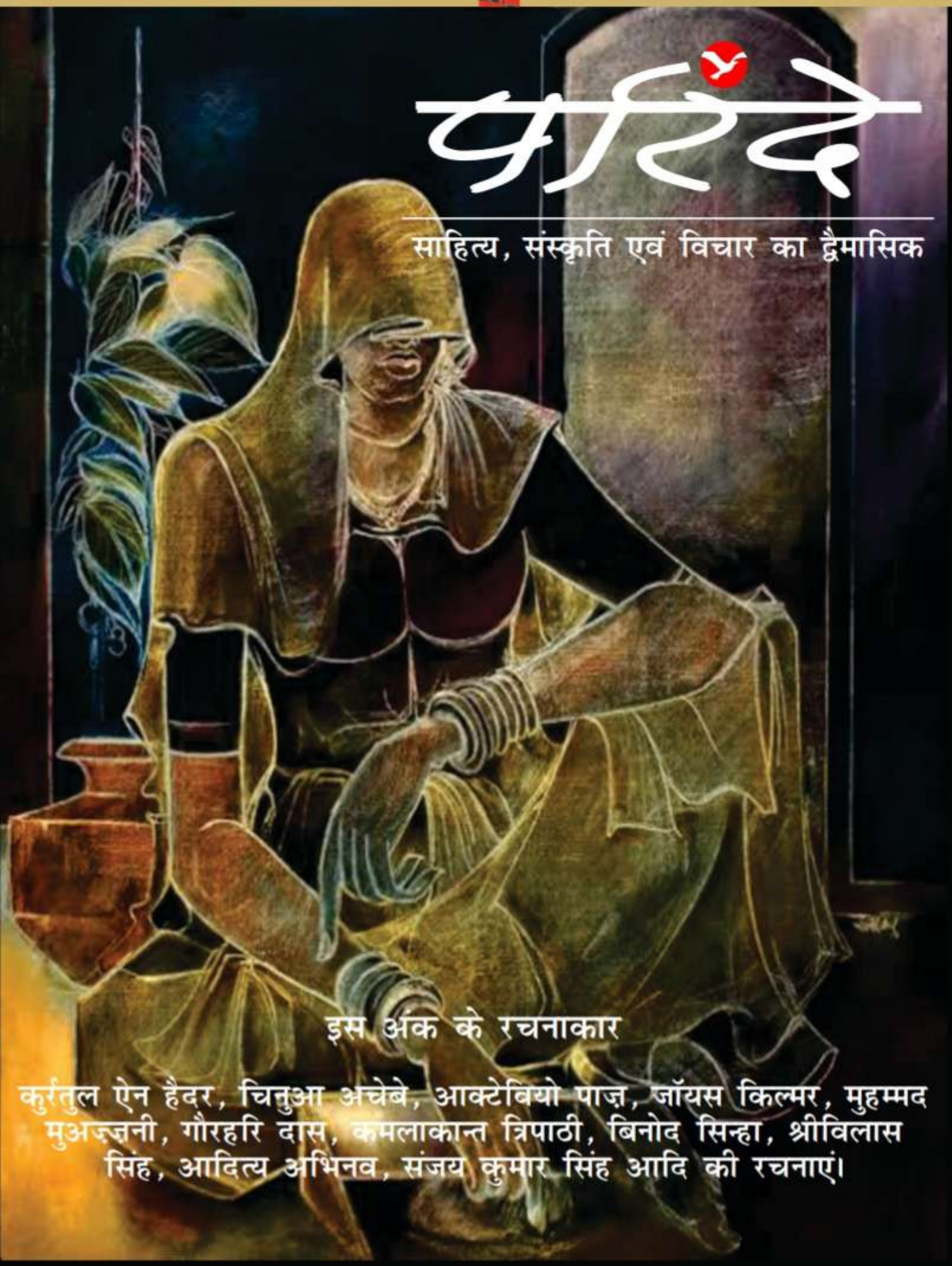

परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक

इस अंक के रचनाकार

कुर्रतुल ऐन हैदर, चिनुआ अचेबे, आक्टेवियो पाज़, जॉयस किल्मर, मुहम्मद मुअज़्ज़नी, गौरहरि दास, कमलाकान्त त्रिपाठी, बिनोद सिन्हा, श्रीविलास सिंह, आदित्य अभिनव, संजय कुमार सिंह आदि की रचनाएं।

परिंदे

साहित्य, संस्कृति एवं विचार का द्वैमासिक

वर्ष 18 • अंक-1 • संयुक्तांक फरवरी-मई 2026

संरक्षक

पंकज बिष्ट, अरविंद मोहन, डॉ. विनोद कुमार सिन्हा

संपादक

डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया

कार्यकारी संपादक

श्रीविलास सिंह

प्रबंध संपादक

ठाकुर प्रसाद चौबे

परामर्श संपादक एवं सहयोग

ज्योति स्वरूप शुक्ल, डॉ. पूनम सिंह, रघुवीर शर्मा, डॉ. पूनम भाटिया

कानूनी एवम् वित्तीय सलाहकार

सिद्धार्थ सिंह (अधिवक्ता), **महेन्द्र तेवतिया** (सी.ए.)

शब्द संयोजन

प्रियांशु

ग्राफिक स्टुडियो

अमित कुमार सोलंकी

संपादकीय संपर्क एवं कार्यालय:
79 ए, दिलशाद गार्डन, नियर पंच मिष्ठान भंडार,
दिल्ली- 110095
मो. 09810636082
E-mail: officeparindepatrika@gmail.com
E-mail: parindepatrika@gmail.com

मूल्य: **100** रु. (एक प्रति), वार्षिक: **800** रु. संस्था और पुस्तकालयों के लिए वार्षिक: **1000** रु. वार्षिक (विदेश): **50** यू.एस.डॉलर, आजीवन व्यक्तिगत: **5000** रु. संस्था: **6000** रु.

बैंक के माध्यम से शुल्क भेजने के लिए

परिंदे पत्रिका का खाता 'पंजाब एंड सिंध बैंक' दिल्ली मे हैं। खाता का नाम-परिंदे है एवं खाता संख्या-04801100049782 है तथा इसका आई.एपफ.सी कोड *PSIB0000484* है।

संपादन-संचालन पूर्णत: अवैतनिक एवं अव्यवसायिक

'परिंदे' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं जिनसे संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं। ♦ **'परिंदे'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।

यह अंक...

संपादकीय

4. वैयक्तिक शांति से वैश्विक शांति तक: **डॉ. शिवदान सिंह भदौरिया**

साक्षात्कार

7. **ईरान के शिक्षाविद, साहित्य कर्मी अली मुहम्मद मुअज़्ज़नी से डॉ. प्रेम कुमार की बातचीत**

धारावाहिक-उपन्यास

21. ऑक्टेवियो पाज़ और द मंकी ग्रैमेरियन: **डॉ. बिनोद सिन्हा**

आलेख

10. भारत और भारत के बाहर रामकथा की व्याप्ति के संदर्भ में तुलसी का रामचरितमानस: **कमलाकांत त्रिपाठी**
46. हरिराम मीणा और गोविंद गारे के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन: **श्री. उदय चिमा बेंढारी**
65. स्वाधीनता आन्दोलन और हिंदी पत्रकारिता: स्वप्न से संकल्प तक: **अमित कुमार**
75. अनित्य और युवा वर्ग: **प्रो. इंदु वीरेंद्रा**

कहानी

13. आवारा-गर्द : **कुर्रतुलऐन हैदर** (उर्दू)
17. उशान्का: **आदित्य अभिनव**
24. चक्रांत: **संजय कुमार सिंह**
38. युद्ध में लड़कियां : **चिनुआ अचेबे** (विदेशी)
50. एक और दिन: **राकेश भ्रमर**
60. मुक्ति का वह लम्हा: **गौरहरि दास** (ओड़िया)
71. टेढ़ी उंगली: **गजेंद्र रावत**
77. अजनबी अपने घर में: **सुशील कुमार**

डायरी अंश/ शब्द चित्र

54. स्वेटर बुनती स्त्रियाँ और लेखक: **ललन चतुर्वेदी**
82. लैंप, लालटेन और डिबिया: **मुकेश झा**

लघुकथा

9. लत, 45. सोनामाटी: **मोना सिन्हा**

कविताएँ/ग़ज़लें

30. **श्रीविलास सिंह**, 32. **मुकेश कुमार मेश्राम**, 33. **सत्यार्थ अनिरुद्ध पंकज**, 35. **डॉ. नाज़ सिंह**, 36. **जयप्रकाश मानस,** 58. **जॉयस किल्मर, एनेट वेन, डगलस मैलोच,** 59. **कार्ल विल्सन बेकर (विश्व कविता), शम्श शिवहरी,** 83. **सदानंद चितले**

किताबें

84. उदारीकरण की अनुदार तस्वीरें: **सूर्यनाथ सिंह**
86. मेहनत, हौसला और कविता की जिम्मेदारी: **आशुतोष कुमार ठाकुर**
88. कोई उत्कृष्ट कृति सायास नहीं लिखी जाती : **प्रवीण कुमार**
90. व्यक्तित्व के दोनो पक्ष: **संजीव ठाकुर**
91. राम कथा की समय यात्रा: **पवन कुमार**
93. लोक प्रशासन और आमजन के बीच पुल का काम करती पुस्तक: **नीरज कुमार मिश्र**

आवरण चित्र: प्रसिद्ध समकालीन चित्रकार डॉ लाल रत्नाकर की पेंटिंग है। 12 अगस्त, 1957 को जौनपुर, उ. प्र. के एक गांव में जन्में लाल रत्नाकर जी गाजियाबाद शहर के एम एम एच कालेज में चित्रकला के प्रोफेसर और विभाग प्रमुख रहे। उनके चित्रों में महिलाओं, और विशेषत: ग्रामीण महिलाओं के रोजमर्रा के जीवन की अनेक छवियां मिलती हैं और एक उदासी सी महसूस होती है। उनके चित्र वास्तविकता लिए हुए होते हैं और उनमें संवेदना की एक अंतर्धारा सी महसूस होती है।

'राम कथा की समय यात्रा' : एक सांस्कृतिक अनुसंधान

➤ *पवन कुमार*

पुस्तक	:	राम कथा की समय यात्रा
लेखक	:	डॉ. प्रदीप दीक्षित
प्रकाशन	:	उद्योग नगर प्रकशन, गाजियाबद
मूल्य	:	₹200/-

सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'राम कथा की समय यात्रा' एक महत्वपूर्ण और पठनीय निबंध संग्रह है जो रामकथाओं के लेखन जैसे नए विषय पर आधारित है। हम सभी जानते हैं कि इस देश में विभिन्न भाषाओं में अलग अलग समय पर अलग अलग क्षेत्रों में रामकथाएं लिखी गईं। लेखक प्रदीप दीक्षित ने इस कृति में रामकथाओं के लेखन के इतिहास को आरंभिक दौर से लेकर वर्तमान तक सिलसिलेवार प्रस्तुत किया है।

श्री प्रदीप दीक्षित की पहचान इतिहासकार, चिंतक, शिक्षक, मार्गदर्शक, अध्येता एवं इंडोलॉजी के प्रखर वक्ता के रूप में होती रही है। डॉ प्रदीप दीक्षित ने इस कृति में अपने 34 निबंध सम्मिलित किए हैं। समस्त संग्रहीत निबंध पूरी तरीके से लोकनायक रामकथा लेखन पर आधारित हैं। लेखक प्रदीप दीक्षित ने इस कृति में प्रत्येक रामकथा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तलाशते हुए उस कथा पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत की हैं। वे राम कथा को भारत का नेशनल नॉरेटिव मानते हैं। 'राम कथा की समय यात्रा' के नाम से ही स्पष्ट है कि यहा निबंध संग्रह रामकथा लेखन की यात्रा को प्रस्तुत करता है। रामकथा लेखन विषय के शोधार्थियों के लिए यह कृति अत्यन्त उल्लेखनीय है।

लेखक ने पूर्व में भी रामकथा पर और राम पर कई

स्क्रिप्ट और पॉडकास्ट इत्यादि तैयार भी किए हैं। यूट्यूब पर भी इस दिशा में काफी सक्रिय हैं। । श्री राम के जीवन चरित्र पर उनके व्याख्यान अक्सर अखबारों में और सोशल मीडिया पर चलते रहते हैं। इस विषय के प्रचार प्रसार हेतु उन्होंने 10 से भी अधिक देशों की सांस्कृतिक यात्राएं की हैं, जिनमें अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रिया, जर्मनी, नीदरलैंड साउथ अफ्रीका एवं मॉरीशस जैसे देश शामिल हैं। रामायण सेंटर मॉरीशस के आमंत्रण पर मॉरीशस में भी वे इस विषय में व्याख्यान दे चुके हैं। वर्तमान में डॉ प्रदीप दीक्षित सिविल सेवाओं के मार्गदर्शन संस्थान उत्कर्ष अकादमी कानपुर में निदेशक एवं भारतीय इतिहास एवं सांस्कृतिक के प्राध्यापक हैं। इस कृति से पूर्व उनकी 18 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। लेखक ने रामायण कथाओं के इसी सफर को अपने लेखन का आधार बनाते हुये विभिन्न रामायणों पर टिप्पणियाँ की हैं। इस कृति के पहले 20 अध्याय तो विभिन्न रामायणों पर केंद्रित हैं लेकिन अगले 14 अध्याय तुलसीदास की रामायण और राम के कृतित्व और व्यक्तित्व पर केंद्रित है। ऐसा माना जाता है कि राम कथा पर विभिन्न कालों में 300 से अधिक रामायण ग्रंथ लिखे गए हैं। हालांकि सार्वकालिकता के आधार आधार पर वाल्मीकि और तुलसीदास की रामायण को ही सर्वाधिक मानता और लोकप्रियता प्राप्त है।

लेखक ने शुरू के निबंधों में महर्षि वाल्मीकि द्वारा संस्कृत में रचित रामायण के दोनों पाठों को पाठकों के सामने रखने का प्रयास किया है जिसमें एक अंश को उन्होंने आदि रामायण और दूसरे को वाल्मीकि रामायण बताया है। लेखक द्वारा यह बताया जाता है कि आदि रामायण में अयोध्या कांड से लेकर युद्ध कांड तक के पांच कांड है जबकि वाल्मीकि रामायण में इन पाँच कांडों के अलावा बालकांड और उत्तर कांड को भी प्रक्षिप्त रूप में जोड़कर अंतिम रूप दिया गया है।

'राम कथा की समय यात्रा' में कुछ ऐसे रामायण ग्रंथों का उल्लेख किया गया है जिनकी राम कथा वाल्मीकि की कथा से अलग है। लेखक ने ऐसी कई रामायणों का जिक्र अपनी इस किताब के विभिन्न निबंधों में किया है। उदाहरण के तौर पर लेखक ने एक निबंध में बौद्ध राम कथा दशरथ जातक के कथानक से वाल्मीकि रामायण की तार्किक तुलना की है। लेखक ने तमिलनाडु के चक्रवर्ती कवि ऋषि कम्बन द्वारा तमिल भाषा में रचित कम्बन रामायण का भी जिक्र किया है। चूंकि लेखक इतिहासकार हैं, तो उन्होंने कई अद्भुत तत्व भी अपनी इस कृति में प्रस्तुत किए हैं। उन्होंने यह तथ्य भी उजागर किया है कि जब ऋषि कम्बन रामायण लिख रहे थे उसी समय उनके समकालीन ऋषि ओट्ट्कुटन भी रामायण लिख रहे थे। ओट्ट्कुटन को जब यह पता चला की कम्बन ऋषि रामायण लिख रहे हैं तो उन्होंने अपनी लिखी रामायण को नष्ट करना शुरू कर दिया क्योंकि वे जानते थे कि कम्बन की रचना उनसे श्रेष्ठ होगी। कम्बन को जब यह पता लगा तो वे तत्काल ही कवि ओट्ट्कुटन के पास पहुंचे लेकिन तब तक वे 6 अध्यायों को नष्ट कर चुके थे, सातवां अध्याय ही शेष था। इसी सातवें अध्याय को कंबन ने अपनी रामायण का सातवां अध्याय बनाया और इसे उत्तर कांड के रूप में जाना जाता है। लेखक ने यह तथ्य भी उद्घाटित किया है कि तमिल भाषा में लिखी हुई कम्बन रामायण को सुनकर तुलसी को यह आत्मग्लानि हुई कि हिंदी प्रदेश में रामचरित पर हिंदी में ही रामायण क्यों नहीं कही गई है। इसी आत्म प्रबोधन से तुलसी ने हिंदी में रामचरितमानस की रचना की। हालांकि यह तथ्य लेखक की अपना स्वतंत्र परिकल्पना भी हो सकती है। लेखक ने तीसरी शताब्दी में लिखे गए राम कथा पर आधारित प्रथम नाटक प्रतिमा नाटक का भी उल्लेख किया है, यह नाटक महाकवि भास द्वारा लिखा गया था। लेखक यह बताता है कि प्रतिमा नाटक में भास ने यह दिखाया कि राम ने बालि का वध छुपकर नहीं किया था अपितु प्रत्यक्ष युद्ध में यह कर्म पूर्ण किया था। छिपकर मारना राम की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था। लेखक ने आठवीं शताब्दी के कन्नौज के राजा यशोवर्मन के दरबारी कवि और नाटककार भवभूति की कृति उत्तर रामचरित का भी उल्लेख किया है। वे लिखते हैं कि उत्तर रामचरित की विशेषता यह है कि इसमें राम की बहन शांता की चर्चा है। हम सब जानते हैं कि राम कथा की समय यात्रा में रघुवंशम का विशेष महत्व है क्योंकि यह महाकाव्य राम के संपूर्ण वंश के 64 राजाओं का वर्णन करता है, हालांकि इसमें राम का वर्णन अति व्यापकता से है। चंद्रगुप्त द्वितीय के नवरत्न कालिदास ने इस कृति में 19 सर्गों में राम कथा का वर्णन किया है। डॉ दीक्षित ने अपने इस शोध परक कार्य में रामचरितमानस से ठीक पहले लगभग 15वीं शताब्दी की अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, संस्कृत में लिखित अद्भुत रामायण, मराठी में लोकप्रिय रचना एकनाथ की भावार्थ रामायण, बांग्ला भाषा में रचित कृति वास ओझा कृत श्री राम पांचाली का न केवल जिक्र किया है बल्कि यह तुलना भी की है कि ये कृतियां वाल्मीकि रामायण और तुलसीकृत रामायण से किस प्रकार भिन्न हैं और किस प्रकार की नाटकीयता उनके कथानक में अतिरिक्त रूप से जोड़ी गई है। लेखक यह मानता है कि राम भक्त के संस्थापक संत रामानंद के कारण कालांतर में राम की स्वतंत्रता देवता के रूप में स्थापना हुई और भक्तिपूर्ण आंदोलन में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। लेखक का मत है कि राम मार्गी भक्ति शाखा की सर्वाधिक सफलतम परिणित गोस्वामी तुलसीदास ही थे।

लेखक ने दो अध्यायों में गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तित्व और उनके जीवन चरित्र पर बड़ी बारीकी से प्रकाश डाला है। लेखक बताते हैं कि तुलसी दास रामायण की रचना से पूर्व वाल्मीकि रामायण का संस्कृत में सस्वर गायन वाचन करते थे। हिंदी में रामचरितमानस की रचना के बाद तुलसी ने वाराणसी चित्रकूट से गायन प्रारंभ किया। यह परंपरा ख्याति प्राप्त कथा वाचकों द्वारा आज भी जारी है। लेखक यह मानते हैं कि तुलसी की लघु कृति हनुमान चालीसा सबऑल्टर्न अर्थात वंचित समाज के लिए आज

भी अजस्र ऊर्जा का स्रोत है। लेखक ने राम कथा के प्रचार प्रसार के विषय में लिखा है कि राम भारतीयता के संपूर्ण विश्व में ब्रांड एंबेसडर है इसीलिए विश्व के 60 देश में राम कथा कही जाती है और 24 देश में रामलीला का मंचन किया जाता है।

लेखक अपनी कृति को आधुनिक घटनाओं से जोड़ते हुए अपनी कृति को प्रासंगिक रखना चाहता है इसी क्रम में उन्होंने अगस्त 2024 में हरदोई के सेशन जज के आदेश का उल्लेख किया है कि कैसे न्यायालय ने एक अपराधी को मृत्युदंड के आदेश को सुनाते हुए रामचरितमानस की चौपाई को संदर्भित किया था। लेखक ने नौ अध्याय रामायण के सातों कांडों पर केंद्रित किए हैं और प्रत्येक कांड का सार संक्षेप में प्रभावी वर्णन किया है। इस कृति का अंतिम अध्याय मॉरीशस के तुलसी पंडित राजेंद्र अरुण जी पर केंद्रित है। लेखक पंडित राजेंद्र अरुण के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित है। उनको भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए लेखक ने उनका भावपूर्ण स्मरण करते हुए लिखा है कि पंडित राजेंद्र अरुण जब रामायण पर बोलते थे तब तन, मन और चेतना तीनों पर असर होता था। उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में जन्मे इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षित राजेंद्र अरुण 1973 में मॉरीशस चले गए। मॉरीशस पहुंचकर राजेंद्र जी ने रामायण के सरस कथा वाचन में बहुत प्रतिष्ठा अर्जित की। राजेंद्र अरुण की पहल पर मॉरीशस सरकार ने संसद के अधिनियम द्वारा विश्व में अपनी तरह का पहला रामायण केंद्र स्थापित किया। 2021 में पंडित जी का देहांत हुआ। लेखक ने अपनी यह कृति पंडित राजेंद्र अरुण को ही समर्पित की है। डॉ प्रदीप दीक्षित यह मानते हैं कि वाल्मीकि, कंबन और तुलसी की भांति स्वर्गीय पंडित राजेंद्र अरुण भी इस कथा यात्रा के सहयात्री हैं।

यह कहा जा सकता है कि यह एक महत्वपूर्ण कृति है जो राम कथा के अध्येताओं के ज्ञान में यह परिवर्धन का काम करेगी। हालांकि इस पुस्तक का मुद्रण और प्रचार प्रसार अत्यंत अव्यवसायिक ढंग से किया गया है इसलिए यह महत्वपूर्ण कृति जन सामान्य तक पहुंच पाएगी, इसमें तनिक संदेह है।

"राम कथा की समय यात्रा' वास्तव में सांस्कृतिक अनुसंधान की परिकल्पना को साकार करता एक निबंध संग्रह है। जैसा कि हम जानते हैं कि रामकथा पर लेखन का क्रम वाल्मीकि कृत रामायण से शुरू होकर तुलसीदास की रामचरितमानस से होते हुये वर्तमान में कथा और कथेतर साहित्य तक जारी है। एक अच्छे विषय पर ज्ञानपरक पठनीय सामग्री प्रस्तुत करने में सफल प्रयास के लिए लेखक को शत शत साधुवाद। ❑

संपर्क: 9412290079